A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

जसरंगी गायन शैली: षड्ज-मध्यम भाव और मूर्च्छना पद्धति का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Adarsh Gupta
Research Scholar, Faculty of Music and Fine Arts, University of Delhi, Delhi

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 10 May, 2026

Gupta, A. (2026). Jasrangi Gayan Shaili: Shads-Madhyam Bhav Aur Murchchhana Paddhati Ka Ek Vishleshnatmak Adhyayan. Swar Sindhu, 14(1), 202-205.

सार

भारतीय शास्त्रीय संगीत में 'जुगलबंदी' का अपना एक अलग ही आनन्द है एवं पंडित जसराज जी ने इसमें 'जसरंगी' की शुरुआत करके एक बिल्कुल नया रंग भर दिया। यह कोई साधारण जुगलबंदी नहीं है बल्कि संगीत की दुनिया में एक बहुत ही अनोखा प्रयोग है। इस शैली की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह हमारी प्राचीन "मूर्च्छना" पद्धति को आज के दौर के हिसाब से एक नए और दिलचस्प रूप में पेश करती है। जहाँ एक पुरुष और एक महिला कलाकार अपनी स्वाभाविक पिच पर रहते हुए भी एक-दूसरे से संवाद करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में जसरंगी गायन के उस तकनीकी आधार का विश्लेषण किया गया है जो षड्ज-मध्यम और षड्ज-पंचम भाव पर टिका है। इसमें यह पड़ताल की गई है कि कैसे दो भिन्न राग अपने अलग स्वर-पदानुक्रम और व्याकरण को बनाए रखते हुए भी परस्पर मधुर संवाद स्थापित करते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि नाद-कड़ी और विशिष्ट स्वर-लगाव किस प्रकार दो अलग रागों के स्वतंत्र अस्तित्व को जोड़कर एक एकीकृत तीसरा भाव उत्पन्न करते हैं। यह शोध जसरंगी के सैद्धांतिक पक्ष के साथ-साथ इसकी प्रस्तुति प्रक्रिया और रागों के भावनात्मक परिदृश्य पर पड़ने वाले इसके प्रभावों को रेखांकित करता है।

***मुख्य शब्द** : जसरंगी जुगलबंदी, मूर्च्छना पद्धति, षड्ज-मध्यम भाव, राग-भाव, पंडित जसराज संगीत विश्लेषण।*

परिचय

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा अनंत काल से प्रवाहमान रही है। इसकी महानता इस बात में निहित है कि इसने अपने मूल व्याकरण को सुरक्षित रखते हुए समय-समय पर नवीन प्रयोगों को आत्मसात किया है। विकास के इसी क्रम में मेवाती घराने के शिखर पुरुष संगीत मार्तंड पंडित जसराज जी द्वारा प्रतिपादित 'जसरंगी' गायन शैली एक क्रांतिकारी मोड़ के रूप में उभरती है। जसरंगी मात्र एक नई गायन पद्धति नहीं है बल्कि यह प्राचीन भारतीय संगीत शास्त्र के विस्मृत हो चुके "मूर्च्छना" सिद्धांत का आधुनिक और क्रियात्मक पुनर्जन्म है।

पारंपरिक जुगलबंदी में जहाँ दो कलाकार एक ही राग और एक ही आधार स्वर (षड्ज सा) पर संवाद करते हैं वहीं जसरंगी इस अवधारणा को 'अर्धनारीश्वर' के दार्शनिक धरातल पर ले जाकर नई परिभाषा प्रदान करती है। इसमें पुरुष और महिला गायक अपनी-अपनी स्वाभाविक गायन सीमाओं अर्थात् वोकल रेंज को बिना किसी समझौते के बनाए रखते हुए दो भिन्न रागों का सह-गायन करते हैं। इस विधा का तकनीकी प्राणतत्व 'षड्ज-मध्यम' भाव का वह सूक्ष्म गणित है जहाँ एक कलाकार का (मध्यम म) स्वर दूसरे कलाकार के लिए (षड्ज सा) का कार्य करता है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य जसरंगी शैली के इसी जटिल क्रियात्मक पक्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। यह शोध पत्र इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे मूर्च्छना पद्धति के माध्यम से दो अलग-अलग रागों के "भाव" और "चलन" को एक ही समय में एक सुसंगत ध्वनि-मंडल में पिरोया जाता है। जसरंगी की यह संरचना न केवल कलाकारों की तकनीकी मेधा और मानसिक एकाग्रता की कसौटी है बल्कि यह श्रोताओं के लिए एक ऐसी अद्वितीय रसानुभूति है जहाँ दो भिन्न रागों के अस्तित्व का विलय एक एकीकृत भाव में परिणत हो जाता है। यह अध्ययन संगीत के इस आधुनिक चमत्कार की वैज्ञानिकता और इसके सौंदर्यशास्त्रीय महत्व को रेखांकित करने का एक विनम्र प्रयास है।

शास्त्रीय आधार: प्राचीन "मूर्च्छना" पद्धति

भारतीय शास्त्रीय संगीत में 'मूर्च्छना' एक बहुत पुरानी और बुनियादी तकनीक है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख भरत मुनि ने "नाट्यशास्त्र" में किया था और बाद में पंडित शारंगदेव ने इसे विस्तार से समझाया। आसान शब्दों में कहें तो मूर्च्छना वह तरीका है जिसमें किसी राग के मुख्य सुर (षड्ज सा) की जगह किसी दूसरे सुर को 'सा' मानकर गाया जाता है। इससे स्वरों का क्रम तो वही रहता है लेकिन उनकी प्रकृति बदल जाती है और एक नया राग या स्वर-स्वरूप जन्म लेता है। प्राचीन काल में जब रागों का आज जैसा रूप नहीं था तब मूर्च्छना ही नए संगीत को रचने का मुख्य आधार थी।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

जसरंगी में मूर्च्छना का आधुनिक और प्रयोगात्मक उपयोग :

पंडित जसराज जी ने प्राचीन 'मूर्च्छना' सिद्धांत को आधुनिक रूप देकर 'जसरंगी' शैली बनाई। पारंपरिक जुगलबंदी में पुरुष और महिला गायकों को एक-दूसरे की पिच के साथ तालमेल बिठाने में दिक्कत होती थी जिससे आवाज की क्वालिटी पर असर पड़ता था। पंडित जी ने इसका समाधान यह निकाला कि महिला के (मध्यम म) या (पंचम प) स्वर को पुरुष का (षड्ज सा) बना दिया। इससे दोनों कलाकार अपनी स्वाभाविक आवाज में गाते हुए भी एक-दूसरे से खूबसूरती से जुड़ जाते हैं।

षड्ज विस्थापन और नए राग की उत्पत्ति

मूर्च्छना का असली जादू स्वरों के बदलने में है। जब हम किसी राग के मुख्य सुर 'सा' को हटाकर किसी दूसरे सुर को आधार मान लेते हैं तो बाकी स्वरों का स्वभाव बदल जाता है और एक नया राग बन जाता है। जैसे: बिलावल थाट के 'रे' को 'सा' मानने पर काफी थाट के स्वर मिल जाते हैं।

जसरंगी इसी तकनीक पर आधारित है। इसमें महिला कलाकार के किसी खास सुर (जैसे मध्यम) को पुरुष कलाकार अपना 'सा' मान लेता है। इससे श्रोताओं को एक साथ दो अलग राग सुनाई देते हैं जबकि कलाकार एक ही स्वर-समूह में गा रहे होते हैं। यह कला जितनी कठिन है उतनी ही असरदार भी पंडित जसराज जी ने इस किताबी सिद्धांत को मंच की एक जीवंत कला बना दिया है।

मुख्य क्रियात्मक पक्ष: षड्ज-मध्यम भाव का सिद्धांत

जसरंगी का पूरा ढांचा (षड्ज-मध्यम या षड्ज-पंचम) के गहरे तालमेल पर टिका है किन्तु हम इस शोध पत्र में केवल षडज – मध्यम भाव पर अधिक चर्चा करेंगे। यह सिर्फ एक प्रयोग नहीं बल्कि संगीत और ध्वनि विज्ञान का बेहतरीन संगम है। भारतीय संगीत में 'सा' और 'म' का रिश्ता सबसे सुरीले रिश्तों में माना जाता है इसलिए इस षड्ज मध्यम भाव को अति इष्ट संवाद में स्थान प्राप्त है। इसी संवाद का इस्तेमाल करके जसरंगी में पुरुष और महिला गायकों की आवाज़ के अंतर को खत्म किया जाता है जिससे दोनों कलाकार एक साथ बहुत प्रभावशाली ढंग से गा पाते हैं।

तकनीकी विश्लेषण: स्वर विस्थापन का गणितीय एवं सांगीतिक अनुपात

जसरंगी शैली का तकनीकी और व्यावहारिक पक्ष संगीत और विज्ञान का एक अनूठा मेल है। पंडित जसराज जी ने पुरुष और महिला गायक की आवाज़ के बीच के स्वाभाविक अंतर (पिच गैप) को खत्म करने के लिए 'सा-म' (षड्ज-मध्यम) के सिद्धांत का भी उपयोग किया। इसमें महिला के 'मध्यम' स्वर को पुरुष का आधार स्वर 'सा' मान लिया जाता है जिससे दोनों कलाकार बिना किसी समझौते के अपनी प्राकृतिक आवाज़ में गा पाते हैं। इस गणितीय तालमेल के कारण दोनों गायक अपने-अपने रागों की शुद्धता बनाए रखते हुए भी एक-दूसरे को सहारा देते हैं और वातावरण में एक मधुर हार्मनी पैदा करते हैं।

इस विधा की असली चुनौती ताल और लय के स्तर पर आती है। जहाँ दोनों कलाकार अलग-अलग राग गाते हुए पूरी तरह स्वतंत्र होते हैं वहीं वे एक ही ताल चक्र और लय की धड़कन से मजबूती से बंधे रहते हैं। इसमें कलाकारों को एक-दूसरे की लयकारी और तिहाइयों के प्रति बहुत सजग रहना पड़ता है। अंततः जसरंगी दो अलग-अलग रागों और मस्तिष्कों का एक ऐसा संगम बन जाती है जहाँ सुर और ताल मिलकर संगीत की पूर्णता का अनुभव कराते हैं। जसरंगी गायन में षडज – मध्यम भाव से गाए जाने वाले कुछ प्रमुख रागों के उद्धरण निम्नलिखित है|

स्त्री (राग दुर्गा)	सा	रे	म	प	ध	सां	रें	म
पुरुष (राग भूपाली)			सा	रे	ग	प	ध	सां

स्त्री (राग चन्द्रकौन्स)	सा	ग	म	ध	नि	सां	ग	म
पुरुष (राग मधुकौंस)			सा	ग	म	प	नि	सां

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

स्त्री (राग आभोगी)	सा	रे	ग	म	ध	सां	रे	ग	म
पुरुष (राग कलावती)				सा	ग	प	ध	नि	सां

दिए गए मूर्च्छना के उद्धारण से हम समझ सकते है की जसरंगी गायन पद्धति में किस प्रकार महिला और पुरुष एक ही समय में अपने ही पिच को बिना बदले मूर्च्छना षडज – मध्यम भाव में दो अलग अलग रागों का गायन करते है | षडज – मध्यम भाव में गाए वाले रागों के कुछ उद्धारण निमांकित है जैसे : मारवा-पुरियाधनाश्री, शुद्धकल्याण-हँसध्वनी, मालकौंस-अहीर भैरव, बिलावल-राग यमन, देस-मधुवंती, तोड़ी-मुल्तानी इत्यादि

जसरंगी गायन क्रिया को प्रचलित करने में अनेकों कलाकारों का योगदान जिनमें कुछ मुख्य कलाकारों के नाम निमांकित है।

- संजीव अभ्यंकर (पुरुष) और अश्विनी भिड़े देशपांडे (स्त्री)
- कृष्ण बोंगने (पुरुष) और दुर्गा जसराज (स्त्री)
- रतन मोहन शर्मा (पुरुष) और अंकिता जोशी (स्त्री)

राग संयोजन और रसात्मक विश्लेषण

जसरंगी जुगलबंदी की सफलता केवल गणितीय गणनाओं पर नहीं बल्कि रागों के चुनाव और उनसे पैदा होने वाले रस की समझ पर टिकी है। इसमें रागों का चयन बहुत सोच-समझकर किया जाता है ताकि उनके बीच 'सा-म' (षड्ज-मध्यम) या 'सा-प' (षड्ज-पंचम) का गहरा तालमेल बना रहे। जैसे राग दुर्गा और भूपाली का मेल जहाँ तकनीक के साथ-साथ उनके समय और प्रकृति का भी ध्यान रखा जाता है ताकि दोनों रागों का स्वभाव एक-दूसरे का पूरक बने। इस विधा की सबसे बड़ी खूबी इसका संयोजित रस है। जब दो अलग-अलग रागों के भाव—जैसे एक की चंचलता और दूसरे की गंभीरता-आपस में मिलते हैं तो वे श्रोता के लिए एक नया और अलौकिक अनुभव पैदा करते हैं। यह अनुभव द्वैत से अद्वैत की ओर ले जाता है जहाँ रागों के नाम पीछे छूट जाते हैं और केवल एक अखंड संगीत शेष रह जाता है। गायकों को आलाप और तानों के दौरान बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है ताकि उनके स्वर दूसरे के राग की सुंदरता को न बिगाड़ें। इसके लिए वे स्वर-विनिमय और नाद-कड़ी का सहारा लेते हैं जिससे यह प्रस्तुति केवल एक तकनीकी प्रयोग न रहकर रागों के सौंदर्य और भावों के आपसी संवाद की पराकाष्ठा बन जाती है।

जसरंगी गायन की अद्वितीय विशेषताएँ एवं चुनौतियाँ

जसरंगी जुगलबंदी भारतीय शास्त्रीय संगीत के आकाश में एक ऐसा जादुई नक्षत्र है जो अपनी तकनीकी जटिलता और रसात्मक गहराई के कारण अद्वितीय है। जहाँ यह विधा श्रोताओं को एक अलौकिक अनुभव प्रदान करती है वहीं कलाकारों के लिए यह किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं है। इसकी अद्वितीयता और इसमें निहित चुनौतियों का विश्लेषण सांगीतिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों धरातलों पर किया जाना आवश्यक है।

मानसिक और सांगीतिक एकाग्रता की अनिवार्य आवश्यकता

जसरंगी का प्रदर्शन सामान्य जुगलबंदी की तुलना में कहीं अधिक कठिन है। एक कलाकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती अपनी पिच अर्थात् आधार स्वर को स्थिर रखना है। चूँकि साथ गा रहा दूसरा कलाकार एक भिन्न स्केल पर गा रहा होता है इसलिए मानवीय मस्तिष्क के लिए यह स्वाभाविक है कि वह दूसरे के सुरों की ओर आकर्षित हो जाए। यहाँ कलाकार को एक द्वैत मानसिक स्थिति में रहना पड़ता है उसे दूसरे गायक के राग को गहराई से सुनना भी है ताकि वह संवाद कर सके और साथ ही अपने सा और राग के व्याकरण को विचलित होने से बचाना भी है। यह उच्च स्तरीय मल्टी-टास्किंग सांगीतिक मेधा और वर्षों के अभ्यास की माँग करती है।

चुनौतियाँ और सौंदर्यबोध का निर्वाह

तकनीकी रूप से वाक्यांशों अर्थात् Phrases का आदान-प्रदान और सवाल-जवाब की प्रक्रिया जसरंगी में बहुत सूक्ष्म हो जाती है। कलाकारों को यह सुनिश्चित करना होता है कि वे दूसरे गायक द्वारा छोड़े गए मध्यम को अपने 'षड्ज' के रूप में तुरंत ग्रहण करें। यदि द्रुत लय या जटिल तानों के दौरान तालमेल में जरा भी त्रुटि हो तो पूरी प्रस्तुति का रसात्मक ढांचा बिखर सकता है। इसके अलावा बंदिशों का अनुकूलन भी एक बड़ी चुनौती है जहाँ एक राग की मूल रचना को दूसरे राग के चलन में ढालना पड़ता है बिना उसके मूल सौंदर्य को खोए।

श्रोताओं पर प्रभाव और आधुनिक स्वीकार्यता

आधुनिक संगीत जगत में जसरंगी की स्वीकार्यता अद्भुत रही है। आज का श्रोता केवल परंपरा नहीं बल्कि परंपरा में नवीनता भी खोजता है। जसरंगी ने श्रोताओं को द्वि-राग सुनने का एक ऐसा अनुभव दिया है जहाँ वे एक ही समय में दो अलग-अलग घराने की गायकी और दो अलग-अलग रसों का आनंद ले सकते हैं। यद्यपि कुछ परंपरावादियों के लिए यह एक विदेशी या अति-प्रायोगिक विधा लग सकती है किंतु इसकी वैज्ञानिकता (मूर्च्छना पद्धति) और इसके द्वारा उत्पन्न संयोजित रस ने इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई है। नई पीढ़ी के कलाकारों के लिए यह विधा अन्वेषण के नए द्वार खोलती है और भारतीय संगीत की जीवंतता को सिद्ध करती है।

उपसंहार

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से जसरंगी' गायन शैली के तकनीकी क्रियात्मक और दार्शनिक पक्षों का जो विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया उससे यह स्पष्ट होता है कि यह विधा भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में एक क्रांतिकारी मील का पत्थर है। शोध का सारांश यह सिद्ध करता है कि जसरंगी मात्र एक आधुनिक प्रयोग नहीं है बल्कि यह हमारे प्राचीन मूर्च्छना और संवाद सिद्धांतों की वैज्ञानिकता का जीवंत प्रमाण है। संगीत मार्तंड पंडित जसराज जी ने जिस सूक्ष्मता से पुरुष और महिला गायक के स्वरों के बीच षड्ज-मध्यम भाव को स्थापित किया उसने जुगलबंदी की पारंपरिक परिभाषा को बदलकर उसे अर्धनारीश्वर जैसी आध्यात्मिक पूर्णता प्रदान की है। यह विधा दर्शाती है कि कैसे दो स्वतंत्र राग अपनी सीमाओं में रहकर भी एक संयोजित रस के माध्यम से अद्वैत की अनुभूति करा सकते हैं।

भविष्य की प्रासंगिकता की दृष्टि से देखें तो जसरंगी आने वाली पीढ़ी के संगीतकारों के लिए अन्वेषण का एक विस्तृत फलक खोलती है। संगीत शिक्षा में इसका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विद्यार्थियों को केवल राग गाना ही नहीं बल्कि स्वरों के गणितीय संबंध मेलोडिक मोड शिफ्टिंग और मानसिक एकाग्रता की जटिलताओं को समझने की प्रेरणा देती है। आधुनिक संगीत जगत में इसकी बढ़ती स्वीकार्यता इस बात का प्रमाण है कि श्रोता अब केवल परंपरा का दोहराव नहीं बल्कि उसमें निहित नवीनता के भी अभिलाषी हैं। निष्कर्षतः जसरंगी गायन शैली अपनी शास्त्रीय जड़ों से मजबूती से जुड़ी होने के बावजूद सांगीतिक रचनात्मकता की सीमाओं का विस्तार करती है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत की जीवंतता और विकासशील प्रकृति को अक्षुण्ण बनाए रखने में सहायक सिद्ध होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Shastri, B. S. (2015). Babulal Shukla Shastri. Chaukhamba Sanskrit Sansthan.
Choudhary, S. (2009). Sangeet Ratnaker. Radha Publication.
Pandurangi, R. (n.d.). Jasrangi: Novel concept of fusion of two ragas for male-female jugalbandi in Indian classical music. Anurag School of Music. sandhyapandurangi-anuragmusic.com
Buddhiraja.S, 2018. Rasraj Pandit Jasraj.
Desai. M. 2018. Jasrangi Jugalbandi: A wondrous show of creative acumen. Creative Yatra.
Naik, A., & Kumari, S. (2024). Jasrangi - Redefining jugalbandi through moorchana. Swar Sindhu. (Journal)
Gadre, H. (2025). The importance of bhaav in musical rendition of raags with special reference to jasrangi jugalbandi gayan. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT). (journal)
See https://www.youtube.com/watch?v=S-q4K_z_Ob8&list=RDS-q4K_z_Ob8&start_radio=1&t=101s&pp=ygUhamFzcmFuZ2kgcmFhZyBhYmhvZ2kgYW5kIGthbGF2YXRpoAcB (accessed on 05.01.2026)
See https://www.youtube.com/watch?v=UEDNi2VFliw&list=RDUEDNi2VFliw&start_radio=1&pp=ygUfamFzcmFuZ2kgcmFhZyBiaHVwYWxpIGFuZCBkdXJnYaAHAQ%3D%3D (accessed on 09.02.2026)
See https://www.youtube.com/watch?v=C4W7ANQbYbE (accessed on 19.02.2026)
See https://www.youtube.com/watch?v=W64rLQ2Lcus&list=RDW64rLQ2Lcus&start_radio=1&pp=ygUIamFzcmFuZ2mgBwE%3D (accessed on 25.02.2026)
See https://www.youtube.com/watch?v=1uxrUMOPpEY&list=RD1uxrUMOPpEY&start_radio=1&pp=ygUTamFzcmFuZ2kgbWFkaHVrb3Vuc6AHAQ%3D%3D (accessed on 02.03.2026)